Vijay Kumar Jha
Deptt in History
Asso prof
V.S.J. College Rajnagar

degree part II

Early problems of Humayun

हुमायूँ का नाम नासिरुद्दीन हुमायूँ था जिसका अर्थ भाग्यशाली होता है बाबर के चार पुत्र में हुमायूँ सबसे बड़ा था। माता का नाम माहिम बेगम था। 26 दिसम्बर 1530 ई० को बाबर के मृत्योपरान्त हुमायूँ 30 दिसम्बर 1530 को राजगद्दी पर बैठा था। बाबर ने हुमायूँ कि शिक्षा दीक्षा में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। हुमायूँ तुर्की, अरबी, फारसी तथा हिन्दी भाषा के ज्ञाता थे। 18 वर्ष के उम्र से ही हुमायूँ युद्धों में भाग लेना शुरू किया। पानीपत एवं खनवा के युद्ध में हुमायूँ ने नेतृत्व किया था।
जब हुमायूँ गद्दी पर बैठा तो उसके लिये ये सिंहासन काँटों का सेज साबित हुआ और हुमायूँ कि विपत्तियाँ प्रारम्भ हो गया।

(1) विशाल सामाज्य :- बाबर ने एक विशाल सामाज्य छोड़ गया था जिसमें भारत के अतिरीक्त मध्य एशिया भी सम्मिलित था इस विशाल सामाज्य को अक्षुण्ण रखना आसान नहीं था।

(2) सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था का अभाव :- इतने विस्तृत सामाज्य में बाबर ने सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था नहीं कर पाया था। अतः इस विस्तृत सामाज्य में सक्षम प्रशासनिक व्यवस्था करना हुमायूँ के लिये आवश्यक था। यह कार्य अत्यन्त जटिल थी।

(3) सामाज्य का विभाजन :- बाबर ने हुमायूँ से वचन लिया था कि सामाज्य को तीनों भाइयों में सामान बटवारा करेगा अतः पिता कि वचन निभाने के लिये हुमायूँ कामरान को काबुल और कान्धार, अस्करी को सम्भल तथा हिन्दाल को अलवर का प्रांत दिया। किंतु कामरान दिल्ली के सिंहासन चाहता था, हलांकि कामरान में योग्यता नहीं थी किंतु वह बहकावे में आ गया, और हुमायूँ के लिये एक समस्या बनी। बहकावे से अस्करी और हिन्दाल भी वंचित नहीं रहे और वे भी हुमायूँ के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ

Scanned with Can

(4) दोषपूर्ण सैन्य संगठन :- बाबर कि सेना में सभी जाति एवं वर्गो के लोग सम्मिलित थे। जब तक बाबर गद्दी पर बैठा था तब तक उसके भय से सेना संगठित और अनुशासित रहे। किन्तु हुमायूँ के काल में स्थिति पलट गई और सेना असंगठित एवं अनुशासनहीन हो गये जो हुमायूँ के लिये एक समस्या बनी।

(5) रिक्त राजकोष :- बाबर ने दिल्ली पर अधिकार करने के बाद राजकोष को खुले हाथों से सैनिकों में बांट दिया तथा काबुल कि जनता को भी काफी धन दिया अतः राजकोष खाली हो गया। हुमायूँ ने कभी भी इस खाली पड़े राजकोष को भरने का प्रयास नहीं किया अतः साम्राज्य आर्थिक दृष्टि से कमजोर हो गई अतः खाली पड़े राजकोष को सुधारना हुमायूँ के लिये आवश्यक था।

(6) बाबर के सम्बन्धियों के षड्यन्त्र :- हुमायूँ को अपने सगे सम्बन्धियों से भी कठिनाई झेलनी पड़ी। मिर्जा लोग बाबर के वंशज बताकर राज सिंहासन को स्वयं उत्तराधिकारी मानते थे। मिर्जा हुमायूँ के सौतेली बहन के पति थे और इस हैसियत से वे गद्दी के हकदार अपने को मानते थे। मुहम्मद सुल्तान जो तैमूर के वंशज अपने को मानते थे वे भी भारत में अपनी महत्वाकांक्षा आजमाना चाहते थे। मोहम्मद ख्वाजा जो बाबर का बहनोई था वे भी षड़यंत्र कर गद्दी पर काबिज होना चाहते थे अतः इन सारे सम्बन्धियों के कोपभाजन का शिकार हुमायूँ को होना पड़ा।

(7) राजपूत समस्या :- बाबर ने खानवा के युद्ध में राणा सांगा को पराजित कर राजपूती शक्ति को चकनाचूर कर दिया था किंतु राजपूत पुनः अपनी शक्ति संगठित कर रहे थे जिसका नेता राणा सांगा के पुत्र रतनसिंह थे।

(8) अफगान समस्या :- राजपूतों के साथ-साथ अफगान सरदार भी अपना राज्य प्राप्त करने कि चेष्टा कर रहा था इब्राहिम लोदी के बाद भी अफगानी शक्ति का उन्मूलन नहीं हुआ था। बिहार में शेर खाँ भी स्वतंत्र राज्य स्थापित करने का स्वप्न देख रहा था तथा मुगलों को भारत से निकालना चाहता था। लोदी के चाचा आलम खाँ भी गुजरात के शासक के सहयोग से दिल्ली पर अधिकार करना चाहता था।

JUNE 2019
Mo Tu We Th
1
3 4 5 6 7 8
10 11 12 13 14 15
17 18 19 20 21 22
24 25 26 27 28 29

Scanned with Cam

इस प्रकार हुमायूं को सिंहासनारूढ़ होते ही समस्या का सामना करना पड़ गया। ऐसी विकट परिस्थिति का सामना करने के लिये एक योग्य व्यक्ति की आवश्यकता थी किन्तु हुमायूं में इन गुणों का सर्वथा अभाव था अतः उसे अपार संकटों का सामना करना पड़ा।

(1) कालिंजर आक्रमण हुमायूँ ने गद्दी पर बैठने के 6 वर्षों के बाद कालिंजर पर आक्रमण किया और उसे समझौता के लिये विवश किया क्योंकि हुमायूं ने कालिंजर के किले को घेर लिया था अन्ततः कालिंजर के शासक ने विवश होकर समझौता कर लिया।

(2) महमूद लोदी से संघर्ष :- महमूद लोदी बिहार पर अधिकार कर दिल्ली पर अधिकार करना चाहता था, हुमायूं कालिंजर से बिहार की ओर कूच किया अगस्त 1532 ई० में दोनों के बीच सामना हुआ जिसमें हुमायूं को विजय प्राप्त हुआ। महमूद की सेना बिहार की ओर भागा। हुमायूं ने भागती हुई अफगान सेना को खदेड़ा किन्तु अपने भाई कामरान के विद्रोह की खबर पाते ही वापस लौट गया।

(3) कामरान का विद्रोह :— कामरान ने हुमायूं को युद्ध में उलझे देख मुल्तान एवं लाहौर पर अधिकार कर लिया तथा पंजाब का प्रदेश देने कि हुमायूं से निवेदन किया परिस्थिति से लाचार होकर हुमायूं ने कामरान कि बात मान लिया।

(4) चुनार का घेरा :— हुमायूं ने अफगान के चुनार के किले को घेर लिया यह किला शेर खां के अधीन था। शेर खां ने हुमायूं कि अधीनता स्वीकार कर लिया। इधर शेर खां पुनः शक्ति संचित करने लगा तब तक हुमायूं इस विजय कि जश्न में डूब गया।

(5) मिर्जाओं का विरोध — 1534 ई० में मिर्जाओं ने विद्रोह कर दिया जिसे हुमायूँ ने परास्त कर बन्दी बना लिया

(6) गुजरात के शासक से संघर्ष :— गुजरात और मालवा के शासक बहादुर शाह ने अपने यहाँ मिर्जाओं को शरण दिया था अतः हुमायूं ने मिर्जाओं को सौंपने का आग्रह किया जिसे बहादुर शाह ठुकरा दिया चित्तौड़ कि महारानी कर्णावती ने बहादुरशाह से रक्षा के लिये हुमायूँ से मदद मांगी किन्तु मौके पर बहादुर शाह ने हुमायूं को शाप्रा कि मदद नहीं करने कि नसीहत दिया। हुमायूं ने बहादुर शाह कि बात में आकर बहादुरशाह को चित्तौड़ पर विजय प्राप्त करने के लिये

Scanned with Can

छोड़ दिया और हुमायूँ मन्दसौर पहुँच गया तथा गुजरात में घेर लिया और अन्त में बहादुर शाह भागकर मांडु चला गया।

(7) शेर खाँ से संघर्ष :- हुमायूँ ने 27 जुलाई 1537 ई० को हिन्दाल के साथ मिलकर शेर खाँ पर आक्रमण कर दिया। शेर खाँ भागकर भरकुण्डा चला गया। 1538 ई० में हुमायूँ चुनार पर अधिकार कर लिया।

(8) चौसा का युद्ध :- हुमायूँ को एक बार फिर शेर खाँ से मुकाबला करना पड़ा क्योंकि शेर खाँ हुमायूँ से बदला लेना चाहता था। कन्नौज में दोनों पक्ष कि सेनायें आमने सामने थी। अधिक वर्षा के कारण शेर खाँ ने हुमायूँ पर आक्रमण कर दिया। वर्षा के कारण मुगलों कि तोप फायर नहीं हो सकी और सैनिक सहित हुमायूँ जान बचाकर भाग खड़ा हुआ।

अफगानों को चौसा कि युद्ध ने अत्यन्त सरलता से मुगलों को परास्त कर दिया और कुछ समय के लिये भारत पर अफगानों कि राज्य कायम हो गया। इसी विजय से शेरखाँ ने शेरशाह कि उपाधि ग्रहण किया।

कन्नौज में परास्त होने के बाद हुमायूँ भागकर आगरा चला गया और वहाँ से दिल्ली लौट आया। फिर दिल्ली से लाहौर पहुँचा जहाँ चारो भाइयों ने मिलकर विचार किया कि शेर खाँ का सामना नहीं किया जाय। अतः कामरान और अस्करी अफगानिस्तान चले गये तथा हुमायूँ और हिन्दाल सिंध चले गये यहीं उसकी पत्नी हमीदा बानु ने उसके पुत्र को जन्म दिया जो कालान्तर में सर्वप्रमुख मुगल सम्राट अकबर बना। 1540 से 1555 तक हुमायूँ को निर्वासित जीवन व्यतीत करना पड़ा इसी बीच शेर खाँ ने सम्पूर्ण पंजाब पर अधिकार कर लिया।

हुमायूँ स्वयं का बड़ा दुश्मन था। क्योंकि विजय मिलने के के बाद वे ऐय्याशी में डूब जाता था। कहने के लिये तो वह भाग्यशाली था किन्तु वह भाग्यहीन निकला उसे कभी भी सफलता नहीं मिली दुर्भाग्य के साये में रहकर वह आजीवन बिताया और अंत में शोक हो गया। वे प्रतिभाशाली हँसमुख, शिक्षित, उदार, दयावान व्यक्ति तो था किन्तु उसमें कई दोषें भी थी।

JUNE
Su Mo Tu We Th Fr Sa
30 1
2 3 4 5 6 7 8
9 10 11 12 13 14 15
16 17 18 19 20 21 22
23 24 25 26 27 28 29